Online at: https://researchtrendsjournal.com ISSN No: 2584-282X

INTERNATIONAL JOURNAL OF TRENDS IN EMERGING RESEARCH AND DEVELOPMENT

Volume 2; Issue 5; 2024; Page No. 42-45

Received: 01-06-2024
Accepted: 09-08-2024

माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की शिक्षण क्षमता और शिक्षण योग्यता के बीच संबंधों का अध्ययन

[1]Reeta Srivastava and [2]Dr. Ram Dhan Bharti

[1]Research Scholar, Department of Education, Maharaja Agrasen Himalayan Garhwal University, Uttarakhand, India
[2]Professor, Department of Education, Maharaja Agrasen Himalayan Garhwal University, Uttarakhand, India

Corresponding Author: Reeta Srivastava

सारांश

शिक्षण को प्राचीन काल से ही एक महान पेशा माना जाता रहा है। फिर भी, यह एक महान पेशा है। शिक्षकों को महान शिक्षण शिक्षा कार्य सौंपा जाता है जो हमारे भावी अभिभावकों को लाने में मदद करता है। शिक्षा की गुणवत्ता शिक्षक की गुणवत्ता से निर्धारित होती है। और एक शिक्षक का मुख्य कार्य सीखने का माहौल बनाना है जिसमें शिक्षार्थी सीखने के लिए प्रेरित हों। शिक्षण एक कला है और शिक्षण की गुणवत्ता शिक्षक के विषय के ज्ञान के प्रति प्रेम, समर्पण और भक्ति पर निर्भर करती है। शिक्षण की गुणवत्ता उसके शिक्षकों के गुणों से ऊपर नहीं उठ सकती। एक प्रभावी शिक्षक ऐसा माहौल बना सकता है। इसके विपरीत एक अप्रभावी शिक्षक छात्र को सीखने का उचित माहौल प्रदान करने में विफल रहता है। तकनीकी प्रगति और वैज्ञानिक नवाचारों के परिणामस्वरूप ज्ञान के नए दृष्टिकोणों के कारण शिक्षक की भूमिका नए आयाम ग्रहण कर रही है। एक शिक्षक की भूमिका और जिम्मेदारियाँ अनंत और असीम हैं और किसी भी शैक्षिक प्रणाली की सफलता शिक्षक के अपेक्षित गुणों पर निर्भर करती है। इसलिए, शिक्षक की गुणवत्ता महत्वपूर्ण है और इसे विश्व स्तर पर सामान्य रूप से शिक्षा की गुणवत्ता और विशेष रूप से छात्रों की सीखने की उपलब्धियों के साथ महत्वपूर्ण रूप से संबद्ध माना गया है। शिक्षा आयोग 1964–66 ने कहा, "शिक्षा की गुणवत्ता और राष्ट्रीय विकास में इसके योगदान को प्रभावित करने वाले सभी विभिन्न कारकों में से, शिक्षकों की गुणवत्ता, क्षमता और चरित्र निस्संदेह सबसे महत्वपूर्ण हैं।" एनईपी 2020 यह भी आग्रह करता है कि शिक्षक वास्तव में हमारे बच्चों के भविष्य को आकार देंगे – और इसलिए, हमारे देश का भविष्य', जिसका अर्थ है कि शिक्षकों को अपनी कक्षाओं में उच्च गुणवत्ता वाले मानव संसाधन तैयार करके राष्ट्र निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभानी होगी।

मूलशब्द: गुणवत्ता, क्षमता, चरित्र, शिक्षक, छात्र, शिक्षण

1. प्रस्तावना

शिक्षा की गुणवत्ता शिक्षा प्रणाली में एक महत्वपूर्ण कारक है। शिक्षा की गुणवत्ता का आकलन छात्रों के प्रदर्शन, छात्रों की पढ़ाई और उनकी पढ़ाई के तरीके पर ध्यान केंद्रित करके किया जाता है। इस संदर्भ में, छात्रों के व्यवहार को आकार देने में स्कूलों और शिक्षकों की अतिरिक्त ज़िम्मेदारियाँ होती हैं। अनिवार्य शिक्षा प्रणाली में स्कूलों को जो बुनियादी कार्य करने होते हैं, वे हर मामले में अलग–अलग होते हैं। हालाँकि, हर समय और जगह की विशिष्ट ज़रूरतों के अलावा, स्कूल का मुख्य उद्देश्य एक तरफ़ छात्रों की उपलब्धि सुनिश्चित करना और दूसरी तरफ़ सभी छात्रों द्वारा अवसरों का समान आनंद लेना है। स्कूलों को, ख़ास तौर पर आज, हमारे समय की चुनौतियों, जैसे कि बहुसंस्कृतिवाद, तकनीकी शासन, विज्ञान के उद्भव और ज्ञान के तेज़ी से नवीनीकरण को देखते हुए ये कार्य करने के लिए कहा जा रहा है। साथ ही, स्कूलों का लक्ष्य छात्रों को न केवल वर्तमान के लिए, बल्कि हमेशा बदलते भविष्य के लिए भी तैयार करना है। इस प्रकार, समाज में शिक्षक की भूमिका इसके सुधार के लिए महत्वपूर्ण है। हमारे भूतपूर्व राष्ट्रपति और शिक्षा महाविद्यालय के अध्यक्ष डॉ. राधाकृष्णन (1949) ने सही कहा था, "समुदाय में शिक्षक की स्थिति बहुत महत्वपूर्ण है। वे पीढ़ियों से संचारित बौद्धिक परंपराओं और तकनीकी कौशल के अधिवक्ता के रूप में कार्य करते हैं और प्रगति के दीपक को प्रज्वलित रखने में मदद करते हैं।" इसलिए, सार्वजनिक स्तर पर शिक्षक समुदाय के वास्तविक रक्षक और संरक्षक हैं। सूचना प्रौद्योगिकी में प्रगति के कारण शिक्षण रणनीतियाँ और विधियाँ तेज़ी से बदल रही हैं। इस प्रकार, शिक्षकों की अपेक्षाएँ बढ़ गई हैं। शिक्षक की गुणवत्ता और छात्र की उपलब्धि के बीच सकारात्मक संबंध पर प्रकाश डाला। यदि शिक्षक पेशेवर दक्षता, शिक्षण योग्यता, शिक्षण के प्रति दृष्टिकोण प्राप्त करते हैं और अपने काम में जिम्मेदारी की भावना दिखाते हैं और यदि उन्हें कई कार्य करने में सक्षम और सशक्त बनाया जाता है तो परिणाम उच्च गुणवत्ता वाला शिक्षण होगा जो अंततः राष्ट्र निर्माण की ओर ले जाएगा। एक सक्षम शिक्षक की पहचान उसके शिक्षण के व्यवहारिक चरण के माध्यम से होती है और यह व्यवहारिक चरण उन छात्रों के साथ बहुत निकटता से जुड़ा होना चाहिए जिन्हें शिक्षक पढ़ा रहा है। इसलिए, शिक्षक विभिन्न स्तरों पर शैक्षिक कार्यक्रमों को लागू करने के लिए प्रमुख

एजेंसी है। इसलिए, छात्रों और उनके कौशल को सही दिशा में आकार देने और ढालने में शिक्षकों का महत्वपूर्ण और निर्णायक स्थान है। सक्षम पेशेवरों को अपने पेशे और समाज की मांगों के साथ इसके बदलते संबंधों के बारे में एक दृष्टिकोण बनाने में सक्षम होना चाहिए (बार्नेट, 1994)। यदि कोई शिक्षक अक्षम है और अपने काम से असंतुष्ट है और अच्छा प्रदर्शन नहीं करता है, तो शैक्षिक प्रणाली की पूरी इमारत ढह जाएगी।

2. अध्ययन का महत्व

शिक्षा प्रक्रिया में शिक्षक मुख्य स्तंभ है। यदि वह कुशल, ईमानदार, देखभाल करने वाला और आत्मविश्वासी है तो हम देश के भविष्य के बारे में आश्वस्त हो सकते हैं। यदि वह अपना काम आधे–अधूरे मन से करता है, तो वह खुद को अभिव्यक्त नहीं कर सकता और राष्ट्र उस पर भरोसा नहीं कर सकता। शिक्षकों के सभी कर्तव्य और जिम्मेदारियाँ सैद्धांतिक रूप से किताबों तक ही सीमित हैं। नीति आयोग द्वारा प्रायोजित ग्रामीण कानपुर में प्रारंभिक शिक्षा योजनाओं के निदानात्मक विश्लेषण (2016) की रिपोर्ट के अनुसार सरकारी स्कूलों में समर्पित शिक्षकों की कमी है और उनके कौशल को उन्नत करने और नई नीतियों और लागू किए गए शैक्षणिक परिवर्तनों की आलोचनात्मक समझ विकसित करने की आवश्यकता है। कक्षाओं में अभी भी पुरानी शिक्षण तकनीकों का उपयोग किया जाता है, कई प्रशिक्षण कार्यक्रमों की विफलता और शिक्षकों में शिक्षण क्षमता, शिक्षण योग्यता, शिक्षण के प्रति दृष्टिकोण और जिम्मेदारी की भावना की कमी अब चिंता का प्रमुख क्षेत्र है। इस प्रकार, यह पता लगाने का प्रयास किया जाता है कि क्या माध्यमिक विद्यालय के शिक्षक वास्तव में अपने काम के प्रति ईमानदार हैं, क्योंकि इस समय बड़ी संख्या में शिक्षकों की अपने पेशे में रुचि नहीं है और वे केवल एक यांत्रिक वेतन भोगी के रूप में पेशे में हैं। इस पेशे में दी जाने वाली सुविधाएं और भत्ते बहुत कम हैं और कई प्रतिभाशाली लोग शिक्षक बनना नहीं चाहते हैं, बल्कि कहीं और जाकर बहुत कम वेतन प्राप्त करते हैं। तदर्थवाद की प्रवृत्ति नौकरी की असुरक्षा की ओर ले जाती है और इसलिए जिम्मेदारी की भावना को प्रभावित करती है। शिक्षा का और अधिक निजीकरण होने जा रहा है और गुणवत्ता कम हो रही है। पिछले तीन दशकों में शिक्षा की गुणवत्ता पर जोर दिया गया और स्कूलों में सीखने की गुणवत्ता बढ़ाने के लिए एनसीईआरटी ने प्रारंभिक स्तर पर सीखने के परिणामों को विकसित किया और शिक्षकों को अधिक सटीक रूप से सीखने के कौशल का पता लगाने और बिना देरी के सुधारात्मक कदम उठाने और विशेष जरूरतों वाले बच्चों सहित सभी छात्रों को सीखने के प्रभावी अवसर प्रदान करने के लिए राष्ट्रीय स्तर पर कक्षा प से ग्प् के लिए सीखने के परिणामों को विकसित करने की प्रक्रिया शुरू की। शिक्षक सीखने के परिणामों को सबसे आगे रखेंगे और विभिन्न शिक्षण–अधिगम संसाधनों का उपयोग करेंगे बरियाना (2019) ने अपने लेख में कहा है कि अधिकारियों से लेकर प्रिंसिपल और शिक्षकों तक सभी मानते हैं कि कानपुर में स्कूली शिक्षा की कम गुणवत्ता वाली कक्षा शिक्षण अभी भी एक बड़ी समस्या है। इसलिए, शिक्षकों में पेशेवर क्षमता, शिक्षण योग्यता, शिक्षण के प्रति दृष्टिकोण और जिम्मेदारी की भावना के बिना शैक्षणिक इनपुट की गुणवत्ता हासिल नहीं की जा सकती।

वर्तमान अध्ययन नीति निर्माताओं, प्रशासकों और मास्टर प्रशिक्षकों के लिए अधिक उपयुक्त और प्रभावी शिक्षक प्रशिक्षण ढांचे (प्री–सर्विस और इन–सर्विस), शिक्षकों के लिए प्रेरण कार्यक्रम, चिंतनशील शिक्षण और अभिनव शिक्षण आदि की योजना बनाने में सहायक होगा। यह शैक्षिक शोधकर्ताओं, शिक्षकों और शिक्षाविदों को छात्रों के सीखने की गुणवत्ता में सुधार करने में सहायता कर सकता है जो काफी हद तक शिक्षक के पेशेवर विकास की गुणवत्ता पर निर्भर करता है। यह भविष्य के शिक्षकों के साथ–साथ कार्यरत शिक्षकों के लिए सकारात्मक दृष्टिकोण और जिम्मेदारी की भावना विकसित करने में भी सहायक हो सकता है। वर्तमान अध्ययन भविष्य में ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के बीच शिक्षक के प्रदर्शन के अंतर को कम करने के लिए उपचारात्मक उपायों को अपनाने में भी मदद करेगा। अध्ययन शिक्षा के क्षेत्र में विशेष रूप से शिक्षण और शिक्षक शिक्षा में योगदान देगा।

3. साहित्य की समीक्षा

कुमार (1991) व्यक्तित्व लक्षणों के संबंध में शिक्षकों के विभिन्न समूहों के बीच शिक्षक योग्यता का अध्ययन करता है। अध्ययन का उद्देश्य शिक्षकों के विभिन्न समूहों – कला, वाणिज्य, गणित के बीच शिक्षक योग्यता निर्धारित करना और इसे व्यक्तित्व लक्षणों के साथ सहसंबंधित करना था। अध्ययन के परिणाम से पता चला कि शिक्षक की योग्यता और व्यक्तित्व लक्षणों के बीच कोई संबंध नहीं है।

अरोड़ा (2000) ने प्राथमिक शिक्षकों के प्रशिक्षण और शिक्षण योग्यता आवश्यकताओं का आकलन करते हुए बताया कि शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों से निकले शिक्षक आम तौर पर उन कार्यों के लिए तैयार नहीं होते हैं जो उन्हें स्कूलों में करने की आवश्यकता होती है। अध्ययनों से पता चला कि प्रारंभिक शिक्षक प्रशिक्षण पूरा करने के बाद जब वे स्कूल में पद ग्रहण करते हैं तो उन्हें वास्तविकता के झटके लगते हैं। ऐसा इस तथ्य के कारण है कि उनका प्रशिक्षण शिक्षकों की वास्तविक कार्यस्थल स्थिति से बहुत दूर था। व्यावसायिक प्रशिक्षण की आवश्यकता वास्तविक प्रदर्शन और प्रदर्शन के वांछित स्तर के बीच के अंतर से उत्पन्न होती है। जो है और जो होना चाहिए, उसके बीच एक विसंगति थी।

सिंह (2003) ने प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों की शिक्षण योग्यता पर अध्ययन किया। अध्ययन के नमूने में 50 प्राथमिक विद्यालय के शिक्षक शामिल थे। अध्ययन के प्रमुख निष्कर्ष थे कि महिला शिक्षक प्राथमिक विद्यालय के पुरुष शिक्षकों की तुलना में पेशेवर रूप से अधिक प्रतिबद्ध थीं और शिक्षण योग्यताओं के आधार पर सेवा–पूर्व और सेवाकालीन शिक्षक प्रशिक्षण में विकसित की जाने वाली योग्यताओं पर ध्यान केंद्रित किया।

राजू और विश्वनाथप्पा (2007) ने आंध्र प्रदेश के प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत डी.एड और बी.एड. प्रशिक्षित शिक्षकों की योग्यता की खोज के लिए एक अध्ययन किया। नलगोंडा जिले के बीस स्कूलों से चालीस बी.एड और डी.एड. प्रशिक्षित प्राथमिक शिक्षकों का एक नमूना लिया गया। अध्ययन के निष्कर्षों से यह बात सामने आई कि ग्रामीण और शहरी प्राथमिक शिक्षकों के बीच संज्ञानात्मक–आधारित, प्रदर्शन–आधारित, भावात्मक–आधारित और परिणाम–आधारित योग्यता में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं था।

4. अध्ययन के उद्देश्य

1. माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की शिक्षण क्षमता और शिक्षण योग्यता के बीच संबंधों का अध्ययन करना।
2. माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों में शिक्षण क्षमता और जिम्मेदारी की भावना के बीच संबंधों का अध्ययन करना।

5. अनुसंधान क्रियाविधि

शोध शब्दावली में, जनसंख्या को व्यक्तियों, संगठनों और वस्तुओं के एक व्यापक समूह के रूप में परिभाषित किया जा सकता है, साथ ही शोधकर्ता के लिए रुचि की सामान्य विशेषताएँ भी। समूहों की सामान्य विशेषताएँ उन्हें अन्य व्यक्तियों, संगठनों, वस्तुओं और अन्य से अलग करती हैं। परिमित जनसंख्या में सभी

सदस्यों को आसानी से गिना जा सकता है। अनंत जनसंख्या का अर्थ है कि इसका आकार असीमित है और इसके सदस्यों की गणना नहीं की जा सकती। इस अध्ययन की लक्षित जनसंख्या में कानपुर के जिलें के सरकारी माध्यमिक विद्यालय के शिक्षक शामिल थे। डेटा संग्रह अनिवार्य रूप से शोध प्रक्रिया का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है और अपेक्षित डेटा एकत्र करने के लिए शोधकर्ता को संबंधित जनसंख्या का नमूना लेना होता है, लेकिन कुल जनसंख्या का अध्ययन संभव और अव्यवहारिक नहीं है। इसलिए, शोध निष्कर्षों को किफायती और सटीक बनाने के लिए नमूनाकरण की अवधारणा पेश की गई थी। जनसंख्या और नमूने में एक 'देना और लेना' संबंध होता है, जिसके तहत जनसंख्या से नमूना बनाया जाता है और बदले में जनसंख्या के लिए सामान्यीकृत नमूने से निष्कर्ष निकाले जाते हैं। "एक नमूना डिजाइन निर्दिष्ट लोगों से नमूना प्राप्त करने या विचार करने के लिए एक स्पष्ट योजना हो सकती है। यह उस रणनीति या प्रक्रिया का वर्णन करता है जिसे अन्वेषक नमूने के लिए वस्तुओं का चयन करने में अपनाएगा। नमूना डिजाइन भी निर्धारित कर सकता है और नमूने में जोड़ी जाने वाली वस्तुओं की संख्या जो नमूने का आकार है। नमूना आकार इस बात पर बहुत प्रभाव डालता है कि नमूना निष्कर्ष किसी विशेष आबादी को कैसे सटीक रूप से उजागर करते हैं । नमूना जितना बड़ा होगा, उतनी ही अधिक संभावना है कि सामान्यीकरण किसी विशेष आबादी का संभावित प्रतिबिंब हो । वर्तमान अध्ययन कानपुर जिलें के सरकारी हाई स्कूलों और सरकारी माध्यमिक विद्यालयों के 350 नियमित सेवारत शिक्षकों के नमूने पर किया गया था। अधिक व्यापक जांच के लिए बहुस्तरीय नमूनाकरण का उपयोग किया गया था।

6. परिणामों का विश्लेषण

स्कोर के वितरण की सामान्यता का परीक्षण करने के लिए, माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की शिक्षण क्षमता के चरों से संबंधित माध्य, माध्यिका, बहुलक, मानक विचलन, तिरछापन और कुर्टोसिस के मानों की गणना की गई, जैसा कि तालिका 1. में दिखाया गया है।

तालिका 1: शिक्षण दक्षता के चर पर माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों के अंकों का माध्य, माध्यिका, बहुलक, मानक विचलन, विषमता और कुर्टोसिस दर्शाती है (एन = 350)

समूह	माध्य	माध्यिका	विधा	एस.डी.	तिरछापन	कर्टोसिस
माध्यमिक विद्यालय शिक्षक	144.22	136.00	141.11	15.50	-0.470	-0.178

माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों के बीच शिक्षण क्षमता के चर को सामान्यता के लिए परखा गया। तालिका 6.1 से पता चलता है कि शिक्षण क्षमता के चर पर माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों के अंकों के माध्य, माध्यिका और बहुलक के मान क्रमशः 144.22, 136.00 और 141.11 हैं जो एक दूसरे के काफी निकट हैं। माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों के मामले में तिरछापन और कुर्टोसिस के मान क्रमशः −0.470 और −0.178 हैं जो वितरण को नकारात्मक रूप से तिरछा और प्लैटिकर्टिक के रूप में दर्शाते हैं। लेकिन ये विकृतियाँ काफी छोटी हैं। इसलिए, वितरण को सामान्य माना जा सकता है। 4.1.2 कुल नमूने की शिक्षण क्षमता पर औसत अंकों का आवृत्ति बहुभुज माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों के कुल नमूने पर शिक्षण क्षमता के चर पर अंकों (माध्य, माध्यिका, बहुलक, मानक विचलन, विषमता और कुर्टोसिस के माप) का विवरण तालिका 2. में प्रस्तुत किया गया है

तालिका 2: शिक्षण क्षमता के चर पर माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों के अंकों का आवृत्ति वितरण (एन = 350)

स्कोर	आवृत्ति
90.110	5
110.130	80
130.150	90
150.170	110
170.190	65
कुल	350

तालिका 2. में शिक्षण क्षमता के चर पर वितरण की आवृत्तियों के अंकों के साथ कुल जनसंख्या की भविष्यवाणी की गई है, अधिकांश आवृत्ति वितरण सरकारी माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों के लिए 150–170 के वर्ग अंतराल के बीच स्थित है।

कुल नमूने के शिक्षण योग्यता के अंकों पर वर्णनात्मक सांख्यिकी

शिक्षण योग्यता पर कुल नमूने के माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की तुलना के लिए, दो समूहों यानी लिंग और स्थानीय के साथ महत्वपूर्ण संबंध का पता लगाने के लिए टी–अनुपात की गणना की गई है और शिक्षण अनुभव के लिए एनोवा का उपयोग किया गया है।

वर्णनात्मक सांख्यिकी का विश्लेषण: अंकों के वितरण की सामान्यता का परीक्षण करने के लिए, माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की शिक्षण योग्यता के चर से संबंधित माध्य, माध्यिका, बहुलक, मानक विचलन, विषमता और कुर्टोसिस के मानों की गणना की गई, जैसा कि तालिका 3. में दिखाया गया है।

तालिका 3: शिक्षण योग्यता के चर पर माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों के अंकों के माध्य, माध्यिका, बहुलक, मानक विचलन, विषमता और कुर्टोसिस को दर्शाती है (एन = 350)

समूह	माध्य	माध्यिका	विधा	एस.डी.	तिरछापन	कर्टोसिस
माध्यमिक विद्यालय शिक्षक	54.93	57.00	61.14	18.48	-0.578	0.642

माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों के बीच शिक्षण योग्यता के चर को सामान्यता के लिए परखा गया। तालिका 6.3 से पता चलता है कि शिक्षण योग्यता के चर पर माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों के अंकों के माध्य, माध्यिका और बहुलक के मान क्रमशः 54.93, 57.00 और 61.14 हैं जो एक दूसरे के काफी निकट हैं। माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों के मामले में तिरछापन और कुर्टोसिस के मान क्रमशः −0.578 और 0.642 हैं जो वितरण को नकारात्मक रूप से तिरछा और लेप्टोकर्टिक के रूप में दर्शाते हैं। लेकिन ये विकृतियाँ काफी छोटी हैं। इसलिए, वितरण को सामान्य माना जा सकता है।

कुल नमूने की शिक्षण योग्यता पर औसत अंकों का आवृत्ति बहुभुज: माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों के कुल नमूने पर शिक्षण योग्यता के चर पर अंकों (माध्य, माध्यिका, बहुलक, मानक विचलन, तिरछापन और कुर्टोसिस के माप) का विवरण तालिका 4. में प्रस्तुत किया गया है

तालिका 4: शिक्षण योग्यता के चर पर माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों के अंकों का आवृत्ति वितरण (एन = 350)

स्कोर	आवृत्ति
0-20	10
20-40	15
40-60	100
60-80	130
80-100	50
100-120	45
कुल	**350**

तालिका 4. में शिक्षण योग्यता के चर पर वितरण की आवृत्तियों के अंकों के साथ कुल जनसंख्या की भविष्यवाणी की गई है, अधिकांश आवृत्ति वितरण सरकारी माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों के लिए 60–80 के वर्ग अंतराल के बीच स्थित है।

7. निष्कर्ष

वर्तमान अध्ययन से पता चलता है कि माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों के शिक्षण के प्रति दृष्टिकोण और शिक्षण अनुभव के बीच महत्वपूर्ण अंतर मौजूद है। इसका मतलब है कि शिक्षण अनुभव शिक्षण के प्रति दृष्टिकोण को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करता है। कम अनुभव वाले शिक्षकों ने अधिक अनुभवी शिक्षकों की तुलना में शिक्षण के प्रति बेहतर दृष्टिकोण दिखाया। ऐसा इसलिए है, क्योंकि जो शिक्षक शिक्षण पेशे में नए हैं वे पेशेवर विकास गतिविधियों में अधिक समय देते हैं और अधिक अनुभवी शिक्षकों की तुलना में शिक्षण के प्रति अधिक सकारात्मक दृष्टिकोण दर्शाते हैं। परिणाम विद्यालता (2007) के अनुरूप हैं जिन्होंने पाया कि औसत अनुभवी शिक्षकों का अपने पेशे के प्रति कम अनुभवी और उच्च अनुभवी शिक्षकों की तुलना में बेहतर स्तर का दृष्टिकोण था। बेलागली (2011) ने पाया कि माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षक जो 26 वर्ष के शिक्षण अनुभव से संबंधित हैं, उनका शिक्षण पेशे के प्रति उच्च दृष्टिकोण है, जबकि माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षक जो 1–15 वर्ष / 16–25 वर्ष के शिक्षण अनुभव से संबंधित हैं।

सन्दर्भ

1. अबाज़ाओग्लू, आई., यिलदिरिम, ओ., और यिलदिज़ान, वाई. भाषाओं के लिए तुर्की अध्ययन अंतर्राष्ट्रीय पत्रिका। साहित्य इतिहास तुर्की. 2014;9(2):1–20.
2. अब्दुल्लाही, एच. और घामी, एच. ईएफएल शिक्षक की भावात्मक रचनाएँ और उनकी जिम्मेदारी की भावना। अंग्रेजी भाषा शिक्षाशास्त्र में अनुसंधान (आरईएलपी); इस्फ़हान. 2016;4(1):64–72.
3. अच्वारिन, एन. ए. थाईलैंड के तीन दक्षिणी प्रांतों के स्कूलों में शिक्षकों की शिक्षक क्षमता का अध्ययन। विद्वानः मानव विज्ञान धारणाएँ विश्वविद्यालय पत्रिकाएँ. 2009;1(1):1–4.
4. अग्रवाल, जे. सी.। विकासशील समाज में शिक्षक और शिक्षा। नोएडा, भारतः विकास पब्लिशिंग हाउस प्राइवेट लिमिटेड।, 2010.
5. अहमद, जे. खान, एम.ए.। प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों की शिक्षण योग्यता का उनके शैक्षणिक योग्यता, स्ट्रीम और स्कूल के प्रकार के संबंध में एक अध्ययन। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एप्लाइड रिसर्च. 2016;2(2):68–72।
6. अहमद, एस. एस., शर्मा, जी. ग्रामीण और शहरी सेवारत शिक्षकों की शिक्षण योग्यता और नौकरी की संतुष्टि– एक तुलनात्मक अध्ययन। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एजुकेशन एंड साइकोलॉजिकल रिसर्च (आईजेईपीआर). 2015;4(2):111–114।
7. ऐकेन, एल. आर. मनोवैज्ञानिक परीक्षण और मूल्यांकन (10वां संस्करण)। बोस्टन, एमएः एलिन और बेकन।, 2000.
8. अकपिनार, ई. यिल्डिज़, और एर्गिन, ओ. भावी विज्ञान शिक्षकों का अपने पेशे के प्रति दृष्टिकोण," डोकुज़ एयुल यूनिवर्सिटी जर्नल ऑफ़ बुका एजुकेशन फैकल्टी, 2010, 19।
9. अलीअकबारी, एम., और काफशगर, एन.बी.। शिक्षकों की जिम्मेदारी की भावना और उनकी नौकरी की संतुष्टि के बीच संबंध परः ईरानी हाई स्कूल शिक्षकों का मामला। यूरोपियन ऑनलाइन जर्नल ऑफ नेचुरल एंड सोशल साइंसेज. 2013;2(2):487–501.
10. ऑलपोर्ट, जी. डब्ल्यू. दृष्टिकोण। मर्चिसन, सी. (एड.) ए हैंडबुक ऑफ सोशल साइकोलॉजी, क्लार्क यूनिवर्सिटी प्रेस, वॉर्सेस्टर, मैसाचुसेट्स।, 1935, 34–36.
11. अल्टे ई. भावी शिक्षकों की व्यक्तिगत जिम्मेदारी की भावना के पूर्वानुमान के रूप में उनकी शिक्षण–विशिष्ट आशाओं की जांच करना। एशिया पैसिफिक जर्नल ऑफ टीचर एजुकेशन. 2017;45(3):267–284।
12. अंबुथासन ए, बालाकृष्णन वी. लिंग, आयु और स्थानीयता के संबंध में शिक्षकों की शिक्षण योग्यता। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ टीचर एजुकेशनल रिसर्च (आईजेटीईआर). 2013;2(1):31–35।
13. अप्पादुरई, आर., सरलादेवी, के. शिक्षक प्रभावकारिता पर शिक्षण योग्यता और शिक्षण दृष्टिकोण। विज्ञान, इंजीनियरिंग और प्रौद्योगिकी में अभिनव अनुसंधान के अंतर्राष्ट्रीय जर्नल, 2015;4(10):10253–10261।
14. अस्थाना के ए., राव, ओ.आर.एस. एनसीआर में सरकारी सहायता प्राप्त और स्व–वित्तपोषित कॉलेजों में कार्यरत शिक्षकों की शिक्षण योग्यता का तुलनात्मक अध्ययन।यूजे जर्नल ऑफ मैनेजमेंट. 2018;6(2):1–5.
15. ऑगस्टीन, जे. शिक्षा महाविद्यालय में छात्र–शिक्षकों के शैक्षिक मनोविज्ञान में शिक्षण योग्यता, योग्यता, शैक्षणिक पृष्ठभूमि और उपलब्धि। एडुट्रैक्स, 2010;9(6):26–27.
16. अटकोसियुनिएने, जेड. संगठन की दक्षताओं को बेहतर बनाने में ज्ञान प्रबंधन सूचना. सूचना विज्ञान, 2010;21(5):52–57.

Creative Commons (CC) License
This article is an open access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution (CC BY 4.0) license. This license permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original author and source are credited.